Toppersnotes®
Unleash the topper in you

छत्तीसगढ़

सहायक शिक्षक

छत्तीसगढ़ कर्मचारी चयन मण्डल, रायपुर (CGSSB)

भाग - 5

छत्तीसगढ़ का सामान्य ज्ञान एवं सामान्य विज्ञान

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	छत्तीसगढ़ सामान्य जानकारी	1
2	छत्तीसगढ़ की भौगोलिक स्थिति	7
3	छत्तीसगढ़ का प्राकृतिक स्वरूप	9
4	छत्तीसगढ़ का भौतिक विभाजन एवं स्वरूप	11
5	छत्तीसगढ़ का अपवाह क्षेत्र	15
6	छत्तीसगढ़ की जलवायु	22
7	छत्तीसगढ़ की मिट्टी	25
8	छत्तीसगढ़ में वनस्पति और वन्यजीव	27
9	वन्यजीव राष्ट्रीय उद्यान और अभ्यारण्य	30
10	छत्तीसगढ़ कृषि जलवायु प्रदेश और फसल	32
11	छत्तीसगढ़ के प्रमुख खनिज	36
12	छत्तीसगढ़ का इतिहास –प्राचीन काल	39
13	वैदिक काल (1500–600 ई.पू.)	42
14	महाजनपद काल (छठवीं शताब्दी ईसा पूर्व)	45
15	छत्तीसगढ़ में मौर्योत्तर काल	46
16	छत्तीसगढ़ में गुप्त वंश	47
17	छत्तीसगढ़ में गुप्तोत्तर काल	49
18	मध्यकालीन छत्तीसगढ़ कल्चुरी राजवंश (990–1741 ई.)	57
19	छत्तीसगढ़ में मध्यकालीन अन्य राजवंश	69
20	छत्तीसगढ़ का आधुनिक इतिहास (1741–1947 ई.)	79
21	छत्तीसगढ़ में ब्रिटिश शासन	85
22	छत्तीसगढ़ में 1857 की क्रान्ति	89
23	छत्तीसगढ़ में राष्ट्रीय आन्दोलन (1885–1947)	91

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
24	छत्तीसगढ़ में आदिवासी विद्रोह	108
25	छत्तीसगढ़ में मजदूर आन्दोलन (1920–40 ई.)	114
26	छत्तीसगढ़ में किसान आंदोलन	116
27	छत्तीसगढ़ की रियासतों का भारत संघ में विलीनीकरण	119
28	छत्तीसगढ़ का गठन	122
29	छत्तीसगढ़ के जिलों का पुनर्गठन	125
30	छत्तीसगढ़ की शासन व्यवस्था	127
31	छत्तीसगढ़ की कार्यपालिका	130
32	छत्तीसगढ़ की न्यायपालिका	135
33	छत्तीसगढ़ की अर्थव्यवस्था	137
34	छत्तीसगढ़ के जनांकिकीय आँकड़े	138
35	छत्तीसगढ़ की जनजातियाँ	145
36	छत्तीसगढ़ लोक कला एवं संस्कृति	159
37	छत्तीसगढ़ के प्रमुख साहित्य और साहित्यकार	172
38	जीव विज्ञान	184
39	भौतिक शास्त्र	219
40	रसायन शास्त्र	233

1 CHAPTER छत्तीसगढ़ सामान्य जानकारी

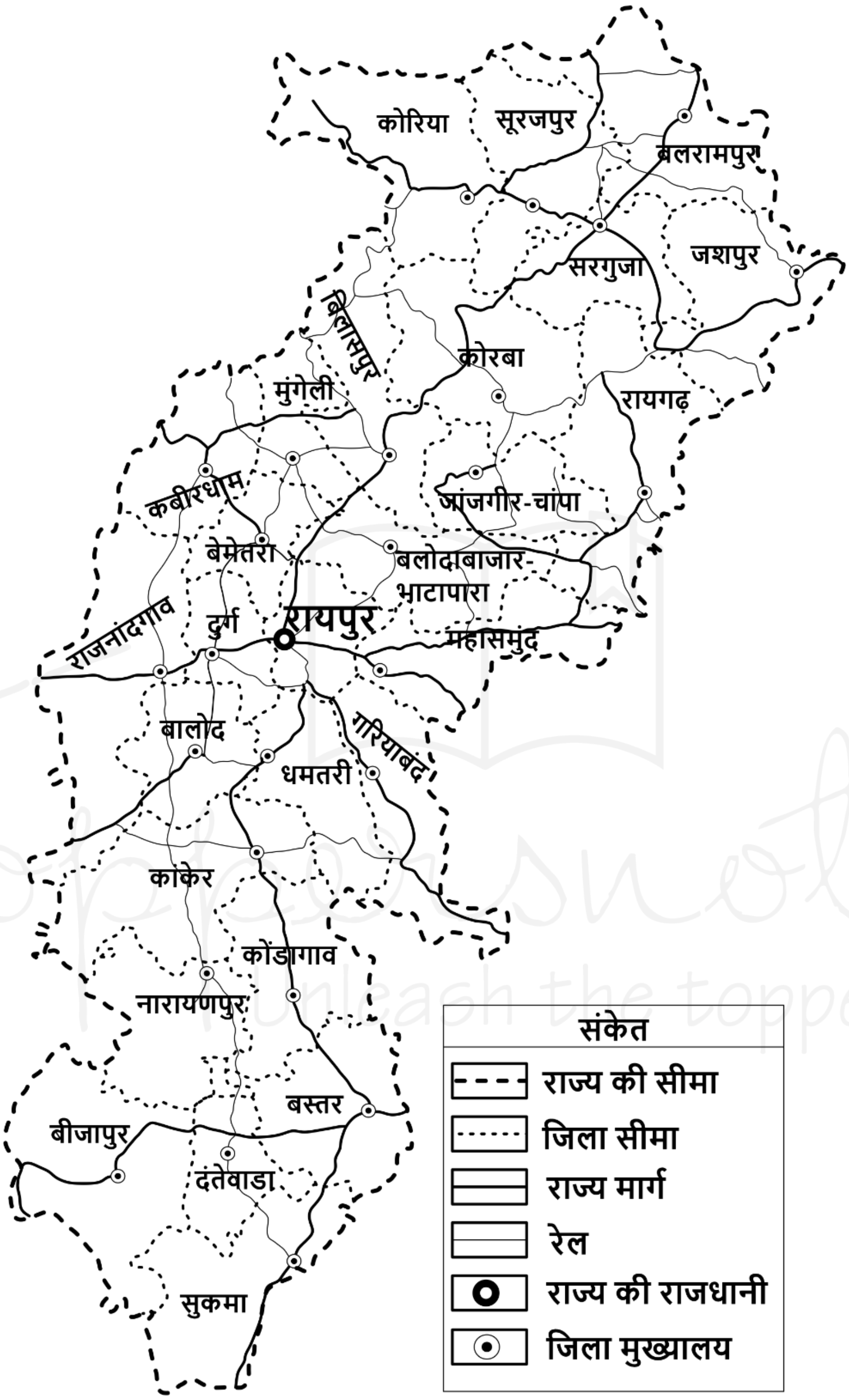

ToppersNotes
Unleash the topper in you

छत्तीसगढ़ राज्य की भौगोलिक सीमा रेखा

क्र.सं	दिशा	राज्य	स्पर्शरत् ज़िलों की संख्या व नाम
1.	पूर्व	ओडिशा	08 (जशपुर, रायगढ़, महासमुंद, गरियाबंद, धमतरी, कोंडागाँव, बस्तर, सुकमा)
2.	पश्चिम-उत्तर	मध्य प्रदेश	07 (बलरामपुर, सूरजपुर, कोरिया, गौरेला- पेंड्रा मरवाही, मुंगेली, कवर्धा, राजनांदगाँव)
3.	पश्चिम	महाराष्ट्र	04 (राजनांदगाँव, कांकेर, नारायणपुर, बीजापुर)
4.	दक्षिण-पश्चिम	तेलंगाना	02 (बीज़ापुर, सुकमा)
5.	उत्तर-पूर्व	झारखंड	02 (बलरामपुर, जशपुर)

6.	उत्तर	उत्तर प्रदेश	01 (बलरामपुर)
7.	दक्षिण	आंध्र प्रदेश	01 (सुकमा)

वर्तमान राज्यपाल	श्री विश्वभूषण हरिचंदन (राज्य के 7वें राज्यपाल)
वर्तमान मुख्यमंत्री	विष्णुदेव साय (राज्य के 4वें मुख्यमंत्री)
स्थापना दिवस	1 नवंबर, 2000 (मध्यप्रदेश से अलग होकर)
राज्य की अवस्थिति	17'-46' उत्तरी अक्षांश से 24'-5' उत्तरी अक्षांश तथा 80'-15' पूर्वी देशांतर से 84'-24' पूर्वी देशांतर
क्षेत्रफल	1,35,191 वर्ग किमी
घनत्व	189 प्रति वर्ग किमी
जनसंख्या (2011)	25,545,198 (2.56 करोड़)
पुरुषों की जनसंख्या (2011)	12,832,895
महिलाओं की जनसंख्या (2011)	12,712,303
जिले	27
राजधानी	रायपुर
नदियाँ	महानदी, इन्द्रावती, सोन, पैरी, हसदेव, सबरी
वन एवं राष्ट्रीय उद्यान	कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान, इन्द्रावती राष्ट्रीय उद्यान
भाषाएँ	हिंदी, छत्तीसगढ़ी, मराठी, उड़िया, गोंडी, कोरकू
सीमावर्ती राज्य	मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, झारखण्ड, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश, तेलंगाना,आंध्र प्रदेश (7 राज्य)
राजकीय पशु	वन भैंसा (जंगली भैंसा)
राजकीय पक्षी	पहाड़ी मैना (हिल मैना)
राजकीय वृक्ष	साल (सरई)
सकल राज्य घरेलू उत्पाद (GSDP)	2024-25 वित्तीय वर्ष में 5,61,736 लाख करोड़ (2023-24 से 11% अधिक)
साक्षरता दर (2011)	71.04%
1000 पुरुषों पर महिलायें (2011)	991
अनुसूचित जनजाति	78,22,902 (जनसंख्या) 30.60 प्रतिशत
अनुसूचित जाति	32,74,269 (जनसंख्या) 12.82 प्रतिशत
विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र	90
संसदीय (लोकसभा) निर्वाचन क्षेत्र	11
रिकार्ड वन क्षेत्र	59,772 वर्ग किमी (कुल क्षेत्रफल का 44.21%)
अन्य नाम	**धान का कटोरा (अर्थ-चावल का कटोरा) ।**

छत्तीसगढ़ राज्य के प्रतीक

- **छत्तीसगढ़ का राजकीय चिन्ह**

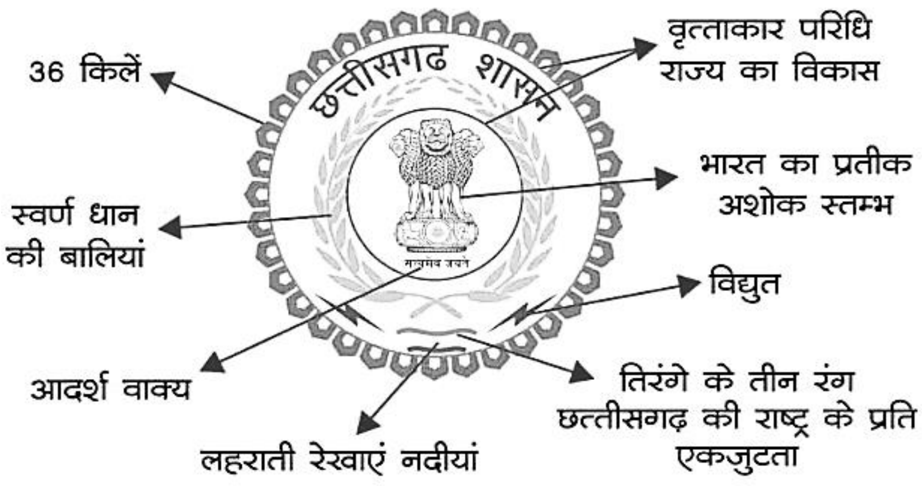

- **04 सितम्बर 2001** को छत्तीसगढ़ राज्य शासन ने प्रतिक चिन्ह को स्वीकृत कर तत्काल प्रभाव से लागू कर दिया।
- यह चिन्ह राज्य की विरासत, अपार संपदा और और इसके उपयोग की अनंत संभावनाओं का प्रतीकात्मक स्वरुप है।
- प्रतीक चिन्ह की वृत्ताकार परिधि राज्य के विकास की निरंतरता को दर्शाती है।
- इस चिन्ह के बाहरी वृत्त में छत्तीसगढ़ के **36 किले वृत्त** पर बाहर की ओर दर्शाती है, इन किलों को हरे रंग दिया गया है मतलब हरा रंग राज्य की समृद्धि, वन सम्पदा और नैसर्गिक सुंदरता को प्रतिबिम्ब करता है।
- इस वृत्त के भीतर धान की बालियां है जो स्वर्णिम आभा लिये हुए है, जो यहां की कृषि पध्दति को दर्शाती है।
- विद्युत संकेत ऊर्जा क्षेत्र में सक्षमता व संभावनाओं को दर्शाती है।
- निचे से ऊपर की ओर तीन लहराती रेखायें राज्य के समृद्ध जल संसाधन एवं नदियों को दर्शाती है।
- तिरंगे के तीन रंग छत्तीसगढ़ की राष्ट्र के प्रति एकजुटता तथा मध्य में राष्ट्रीय सारनाथ के चार सिंह और उसके निचे सत्यमेव जयते राष्ट्र के प्रति सत्यनिष्ठा के प्रतिक को दर्शाता है।

छत्तीसगढ़ का राजकीय प्रतीक वाक्य

- पहले का राज्य प्रतीक वाक्य- **विश्वसनीय छत्तीसगढ़**
- 5 जून 2019 को **गढ़बो नवा छत्तीसगढ़** को राज्य का प्रतीक वाक्य बनाया गया।

छत्तीसगढ़ का राजकीय वृक्ष- "साल /सरई"

- **वैज्ञानिक नाम**- शोरिया रोबुस्ता (Shorea Robusta)।
- वृंदवृत्ति एवं अर्द्धपर्णपाती वृक्ष
- **ऊंचाई 12 से 30 मीटर** एवं **चौड़ाई 15 से 20 फिट**
- **वार्षिक वर्षा**- 9 सेंटीमीटर से लेकर 508 सेंटीमीटर
- **मौसम**- उष्ण तथा कम ठंडा

अन्य तथ्य

- साल का वृक्ष बस्तर जिला में सर्वाधिक संख्या में पाया जाता है। इस कारण से बस्तर को साल वनों का द्वीप भी कहा जाता है।
- साल का वृक्ष लगभग पाँचसौ साल तक जीवित रह सकता है।
- साल के वृक्ष को बस्तर में देवता का दर्जा दिया गया है।
- इनकी लकड़ी इमरती कामों में प्रयोग की जाती है।
- साल की लकड़ी भूरे रंग की कठोर भारी और मजबूत होती है।
- रेल्वे लाइन में भी साल के लकड़ियों का उपयोग किया जाता है।
- साल के वृक्षों से निकलने वाला रेजिन अम्लीय होता है और यह सुगन्धित धूप तथा औषधि के रूप में इस्तेमाल किया जाता है।

Unleash the topper in you

छत्तीसगढ़ का राजकीय पक्षी- "बस्तर की पहाड़ी मैना"

- राज्य शासन ने **जुलाई 2001** को बस्तरिया पहाड़ी मैना को राजकीय पक्षी के रूप में चुना।
- **वैज्ञानिक नाम**- ग्रेटी पेनिन्सुलेरिस
- **आकार-** 28 -30 सेंटीमीटर
- **वजन**- 200 ग्राम से लेकर 250 ग्राम तक।
- **संरचना**- पहाड़ी मैना की चोंच और पैर नारंगी पीले रंग के होते है, और पूरा शरीर चमकीला काले रंग का होता है ।

- **स्थान**- सदाबहार जंगलों तथा नम पतझड़ वाले वनों मे पाई जाती है।
- **मुख्य भोजन**- कीड़े मकोड़े एवं फूलों का रस।
- **राज्य में मुख्य विचरण क्षेत्र**- दंतेवाड़ा, बीजापुर, नारायणपुर, कोंडागांव, जगदलपुर, कांगेर घाटी, गुप्तेश्वर, तिरिया, कूंचा आदि वनों में.
- इसके अस्तित्व के खतरे की वजह से **कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान** में पहाड़ी मैना को संरक्षित किया जा रहा है।
- इसमें मनुष्य की आवाज और भाषा की सटीक नक़ल करने की विशेष प्रतिभा होती है

छत्तीसगढ़ का राजकीय पशु- "वनभैसा/जंगली भैसा"

- **वैज्ञानिक नाम** – बूबालस बुबेसिल (Bubalus Bubalise)
- **क्षेत्र**- बस्तर जिले में इंद्रावती राष्ट्रीय उद्यान, कुटरू वन क्षेत्र एवं उदयन्ती अभ्यारण्य।
- **आकार**- औसतन पांच फिट लम्बा, 900 किलोग्राम वजन, सींग अधिकतम 197.6 सेंटीमीटर लंबे ।
- **संरचना-** सम्पूर्ण शरीर काला, किन्तु जन्म के समय यह लगभग पीला ।
- ये शाकाहारी होते है और घास ही इनका प्रमुख आहार होता है।
- नर जंगली भैंसे को **अरना** और मादा वन भैंसे को **अरनी** कहा जाता है

छत्तीसगढ़ की राजकीय भाषा- "छत्तीसगढ़ी"

- **28 नवम्बर 2007** को राज्य भाषा का दर्जा मिला।
- **छत्तीसगढ़ी राजभाषा दिवस**- 28 नवम्बर (विधेयक पारित होने के उपलक्ष्य में)
- **छत्तीसगढ़ी भाषा की लिपि**- देवनागरी ।
- यह पूर्वी हिन्दी की प्रमुख बोली है।
- प्राचीन काल में छत्तीसगढ़ी भाषा को कोसली कहा जाता था।
- छत्तीसगढ़ भाषा का सबसे प्राचीनतम आलेख- दंतेवाड़ा शिलालेख ।
- **बिजहा कार्यक्रम**- छत्तीसगढ़ी के लुप्त होते शब्दों को संगृहीत करने हेतु ।
- **माई कोठी योजना-** छत्तीसगढ़ी एवं छत्तीसगढ़ी में लिखे साहित्य के एकत्रीकरण के लिए.

छत्तीसगढ़ का राजकीय फल- "कटहल"

- **वानस्पतिक नाम**- औनतिआरिस टोक्सिकारीआ (Antiaris Toxicaria).
- यह एक मध्यम आकार का शाखायुक्त, सपुष्पक तथा बहुवर्षीय वृक्ष है

छत्तीसगढ़ का राजकीय व्यंजन- "पपची"

- गेंहू के आटे में थोड़ा चावल का आटा मिलाकर, मोयन डालकर, पानी से गूंधकर, मोटे चौकोर आकार में तेल मे तलकर, गुड़ की चाशनी में डुबाकर यह कुरकुरा मिठाई बनता है।

छत्तीसगढ़ का राजकीय पुष्प- गेंदा फूल (Marigold)

- **वैज्ञानिक नाम** - राइनोकोस्टिलिस गिगेंटिया (Rhynchostylis Gigantea).

छत्तीसगढ़ का राजकीय गीत- "अरपा पैरी के धार महानदी हे अपार"

- **घोषणा**- 3 नवंबर 2019

- **अधिकृत अधिसूचना**- 18 नवंबर 2019
- **गीत के रचियता**- डॉ. नरेंद्र वर्मा
- इस गीत में चार नदियों का वर्णन है- अरपा, पैरी, महानदी, इंद्रावती
- सात जिलों का उल्लेख है- सरगुजा, रायगढ़, बिलासपुर, रायपुर, राजनांदगाव, दुर्ग एवं बस्तर।

सामान्य जानकारी: प्रमुख तथ्य-

- राज्य का नाम -छत्तीसगढ़
- राज्य का प्राचीन नाम -दक्षिण कोसल
- राज्य की स्थापना -1 नवंबर, 2000 (देश का 26वाँ राज्य)
- राज्य का मातृ राज्य -मध्य प्रदेश
- छत्तीसगढ़ मध्यप्रांत का एक संभाग बना -1862 में
- राज्य की राजधानी -नवा रायपुर (पहले रायपुर)
- राज्य की आकृति -सी. हार्स (समुद्री घोड़े) के समान
- राज्य गठन हेतु अधिनियम -मध्य प्रदेश राज्य पुनर्गठन अधिनियम, 2000
- राज्य निर्माण का समय -9वीं पंचवर्षीय योजना (1997-2002)
- राज्य की राजकीय भाषा -छत्तीसगढ़ी (स्वीकृति 28 नवंबर, 2007 को)
- राज्य की विधायिका -एकसदनात्मक (विधानसभा)
- राज्य में राज्यसभा सीट -5
- राज्य में लोकसभा सीटें -11
- राज्य में विधानसभा सीटें -90
- राज्य का उच्च न्यायालय -बिलासपुर (देश का 19वाँ उच्च न्यायालय)
- राज्य में रेलवे ज़ोन -दक्षिण-पूर्व मध्य रेलवे (बिलासपुर) (देश का 16वाँ रेलवे ज़ोन)
- राज्य में शासकीय मुद्रणालय -राजनांदगाँव (1989)
- राज्य में ब्रेल लिपि प्रेस -तिफरा (बिलासपुर)
- राज्य का राजस्व मंडल मुख्यालय -बिलासपुर
- राज्य का नृजातीय म्यूज़ियम -जगदलपुर
- राज्य में कुल ज़िलों की संख्या -28 (अगस्त 2019 में घोषित 28वाँ ज़िला- गौरेला-पेंड्रा-मरवाही)
- राज्य निर्माण के समय ज़िलों की संख्या -16
- राज्य निर्माण के बाद 2007 में सृजित ज़िले ख़02 (नारायणपुर, बीज़ापुर)
- दिसंबर 2011 में कुल ज़िलों की संख्या -18
- 2012 में सृजित ज़िले -09
- क्षेत्रफल के अनुसार सबसे बड़ा ज़िला -राजनांदगाँव
- क्षेत्रफल के अनुसार सबसे छोटा ज़िला -दुर्ग
- राज्य गठन के समय कुल संभाग -03 (रायपुर, बिलासपुर, बस्तर)
- वर्तमान में कुल संभाग -05 (रायपुर, बिलासपुर, बस्तर, सरगुजा, दुर्ग)
- राज्य में कुल तहसील -172
- सबसे बड़ी तहसील -पोड़ी उपरोड़ा (कोरबा)
- विकासखंडों की संख्या -146
- आदिवासी विकासखंडों की संख्या -85,
- ज़िला पंचायतों की संख्या -27
- जनपद पंचायतों की संख्या -146
- ग्राम पंचायतों की संख्या -11664
- नगर निगमों की संख्या -14
- नगर पालिकाओं की संख्या -44
- नगर पंचायतों की संख्या -111
- कुल ग्राम (जनगणना 2011) -20126
- कुल आबाद ग्राम (जनगणना 2011) -19576
- कुल वीरान ग्राम (जनगणना 2011) -55

छत्तीसगढ़ के प्रचलित स्थल

छत्तीसगढ़ की काशी/वाराणसी	खरौद
छत्तीसगढ़ का कश्मीर	चैतुरगढ़ (कोरबा)
छत्तीसगढ़ का चित्तौड़	लाफागढ़ (कोरबा)
छत्तीसगढ़ का खजुराहो	भोरमदेव (कबीरधाम)
छत्तीसगढ़ का प्रयाग	राजिम (गरियाबंद)
छत्तीसगढ़ का शिमला	मैनपाट (सरगुजा)
छत्तीसगढ़ का नागलोक	तपकरा (जशपुर)
छत्तीसगढ़ का चेरापूंजी	अबूझमाड़ (नारायणपुर)
छत्तीसगढ़ का प्राचीनतम मंदिर	देवरानी-जेठानी मंदिर (5वीं-6वीं शताब्दी) (तालागाँव, बिलासपुर)
छत्तीसगढ़ की ज्ञान राजधानी	भिलाई (दुर्ग)
छत्तीसगढ़ की तालाबों की नगरी	रतनपुर (बिलासपुर)
छत्तीसगढ़ में मंदिरों की नगरी	आरंग (रायपुर)
छत्तीसगढ़ में टंकियों का शहर	रतनपुर (बिलासपुर)
छत्तीसगढ़ में चौराहों का शहर	जगदलपुर (दंतेवाड़ा)
छत्तीसगढ़ में साल वनों का द्वीप	बस्तर
छत्तीसगढ़ की टमाटर राजधानी	लुडेंग (जशपुर)
छत्तीसगढ़ का शिवकाशी	बिलासपुर

छत्तीसगढ़ में प्रथम

छत्तीसगढ़ का प्रथम क्षेत्रीय राजवंश	राजर्षितुल्य कुल वंश
प्रथम कल्चुरि शासक	कलिंगराज (राजधानी तुम्माण)
प्रथम मराठा शासक	बिंबाजी भोंसले (राजधानी रतनपुर)
प्रथम सूबेदार	महिपत राव दिनकर (राजधानी रतनपुर)
प्रथम ज़िलेदार	कृष्णाराव अप्पा
प्रथम ब्रिटिश अधीक्षक	कैप्टन एडमंड
प्रथम डिप्टी कमिश्नर	चार्ल्स सी. इलियट
प्रथम महिला शासिका	प्रपुल्ल कुमारी देवी
प्रथम जनजाति विद्रोह	हल्बा विद्रोह (1774-1776)
प्रथम मुख्यमंत्री	श्री अजीत प्रमोद कुमार जोगी
प्रथम मुख्य न्यायाधीश	श्री डब्ल्यू.ए. शशांक

प्रथम कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश	श्री आर.एस. गर्ग
प्रथम निर्वाचन आयुक्त	श्री अजय कुमार सिंह
प्रथम राज्य मानवाधिकार आयोग अध्यक्ष	श्री के. एम. अग्रवाल
प्रथम विधानसभा अध्यक्ष	श्री राजेंद्र प्रसाद
प्रथम विधानसभा उपाध्यक्ष	श्री बनवारीलाल अग्रवाल
प्रथम गृह मंत्री	श्री नंदकुमार पटेल
प्रथम शिक्षा मंत्री	श्री सत्यनारायण शर्मा
प्रथम लोकायुक्त	श्री न्यायमूर्ति कृष्णमुरारी अग्रवाल
प्रथम राज्यपाल	श्री दिनेश नंदन सहाय
प्रथम मुख्य सूचना आयुक्त	श्री ए.के. विजयवर्गीय
प्रथम मुख्य सचिव	श्री अरुण कुमार
प्रथम राज्य महिला आयोग अध्यक्ष	श्रीमती हेमवंत पोर्ते
प्रथम पुलिस महानिदेशक	श्री मोहन शुक्ल
छत्तीसगढ़ राज्य लोक सेवा आयोग के प्रथम अध्यक्ष	श्री मोहन शुक्ल
प्रथम महिला मंत्री (अविभाजित मध्य प्रदेश में)	श्रीमती पद्मावती देवी
प्रथम महिला मंत्री (छत्तीसगढ़ राज्य में)	श्रीमती गीता देवी सिंह
प्रथम महिला सांसद	मिनीमाता (रायपुर संसदीय क्षेत्र से)
छत्तीसगढ़ से सर्वाधिक बार सांसद	स्व. विद्याचरण शुक्ल (9 बार)
छत्तीसगढ़ राज्य गो- सेवा आयोग के प्रथम अध्यक्ष	पवन दीवान
छत्तीसगढ़ राज्य विद्युत नियामक आयोग के प्रथम अध्यक्ष	एस. के. मिश्र
छत्तीसगढ़ के प्रथम व्यक्ति, जो किसी राज्य के मुख्यमंत्री बने	पं. रविशंकर शुक्ल (मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री)
छत्तीसगढ़ के प्रथम व्यक्ति, जो किसी राज्य के राज्यपाल बने	ई. राघवेंद्र राव (मध्य प्रदेश के राज्यपाल)
छत्तीसगढ़ के प्रथम व्यक्ति, जो मध्य प्रदेश विधानसभा अध्यक्ष बने	मथुरा प्रसाद दुबे

पद्मश्री से सम्मानित प्रथम व्यक्ति	मुकुटधर पांडेय (1976)
पद्मश्री से सम्मानित प्रथम महिला	तीजनबाई (1987)
पद्मभूषण से सम्मानित प्रथम व्यक्ति	हबीब तनवीर (2002)
पद्मभूषण से सम्मानित प्रथम महिला	तीजनबाई (2003)
मिनीमाता सम्मान की प्रथम प्राप्तकर्त्ता	श्रीमती बिन्नी बाई (2001)
डॉ. खूबचंद बघेल सम्मान के प्रथम प्राप्तकर्त्ता	श्रीकांत गोवर्धन (2001)
पं. रविशंकर शुक्ल सम्मान के प्रथम प्राप्तकर्त्ता	केयरभूषण (2001)
पं. सुंदरलाल शर्मा सम्मान के प्रथम प्राप्तकर्त्ता	विनोद कुमार शुक्ल (2001)
गुण्डाधूर सम्मान के प्रथम प्राप्तकर्त्ता	आशीष अरोरा (2001)
प्रथम महाविद्यालय	छत्तीसगढ़ महाविद्यालय, रायपुर (1938)
प्रथम संस्कृत महाविद्यालय	रायपुर (1955)
प्रथम विश्वविद्यालय	इंदिरा कला एवं संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ (राजनांदगाँव) (1956)
प्रथम सामान्य शिक्षा विश्वविद्यालय	पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (1964)
प्रथम निजी विश्वविद्यालय	महर्षि विश्वविद्यालय, बिलासपुर (2002)
प्रथम चिकित्सा महाविद्यालय	पं. नेहरू चिकित्सा महाविद्यालय, रायपुर (1963)
छत्तीसगढ़ का सबसे प्राचीन I.T.I.	कोनी (बिलासपुर 1904)
राज्य का प्रथम विधि विश्वविद्यालय	हिदायतुल्ला राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय, रायपुर
राज्य का प्रथम निजी चिकित्सा महाविद्यालय	चंदूलाल चंद्राकर मेमोरियल चिकित्सा महाविद्यालय, दुर्ग
राज्य का प्रथम खेल विश्वविद्यालय	राजनांदगाँव (प्रस्तावित)
राज्य का प्रथम सरकारी चिकित्सा महाविद्यालय	पं. जवाहरलाल नेहरू स्मृति चिकित्सा महाविद्यालय, रायपुर (1963)

2 CHAPTER

छत्तीसगढ़ की भौगोलिक स्थिति

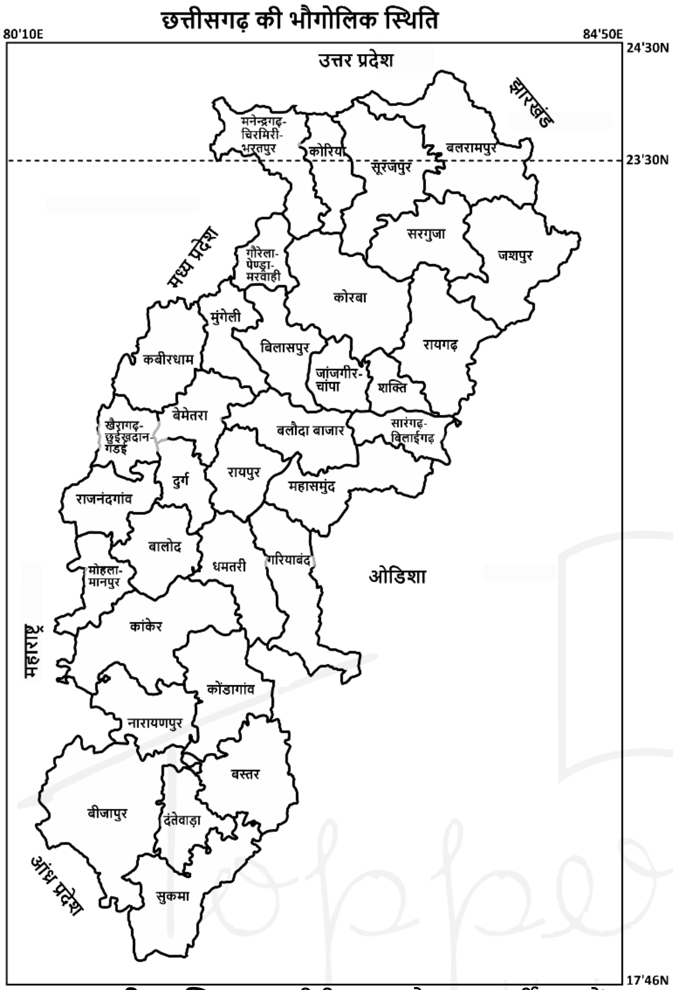

- **राज्य की अवस्थित**- प्रायद्वीपीय पठार के उत्तर-पूर्वी भाग में।
- **राज्य की भौगोलिक स्थिति-**
  - **अक्षांशीय विस्तार-** 17°46' उत्तरी अक्षांश से 24°5' उत्तरी अक्षांश
  - **देशान्तरीय विस्तार-** 80°15' पूर्वी देशान्तर से 80°20' पूर्वी देशांतर
- **कुल भौगोलिक क्षेत्रफल-** 1,35,191 वर्ग किलोमीटर (भारत के क्षेत्रफल का 4.11 प्रतिशत)।
- यह क्षेत्रफल की दृष्टि से देश का 10 वाँ बड़ा राज्य है।
- राज्य का क्षेत्रफल पंजाब, हरियाणा तथा केरल तीनों राज्यों के क्षेत्रफल के योग से अधिक है।
- छत्तीसगढ़ राज्य का बस्तर संभाग (39114 वर्ग किमी) क्षेत्रफल में केरल राज्य से भी बड़ा है।
- छत्तीसगढ़ राज्य की उत्तर-दक्षिण लम्बाई 360 किमी तथा पूर्व-पश्चिम चौड़ाई 140 किमी है।
- इसकी भौगोलिक सीमाएं देश के 6 राज्यों की सीमाओं को स्पर्श करती है।
  - उत्तर में **उत्तर प्रदेश,**
  - उत्तरी-पूर्वी सीमा में **झारखण्ड,**
  - दक्षिण-पूर्व में **ओडिशा,**
  - दक्षिण में **आन्ध्र प्रदेश**,
  - दक्षिण-पश्चिम में **महाराष्ट्र** तथा
  - उत्तरी-पश्चिम भाग में **मध्य प्रदेश**
- कर्क रेखा राज्य के उत्तरी भाग से होकर गुजरती है।
- **समुद्र** को निकट होने के कारण समुद्री जलवायु का प्रभाव स्पष्ट दिखाई पड़ता है।

छत्तीसगढ़ की भूगर्भिक संरचना-

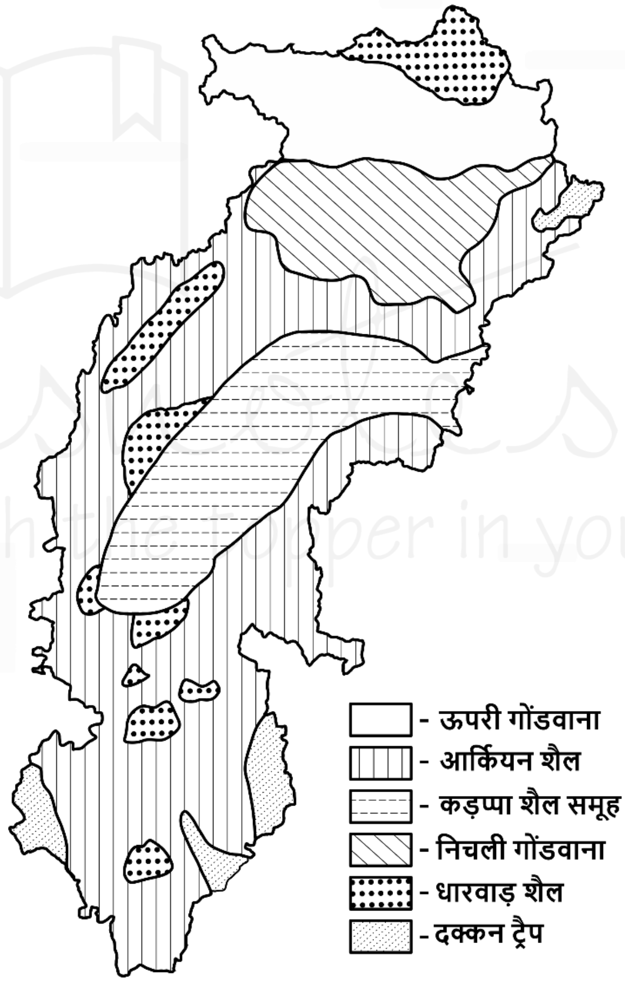

- **भूवैज्ञानिक** संरचना के आधार पर ही धरातलीय संरचना, मिट्टी, खनिज पदार्थों की उपलब्धता जलीय स्थिति एवं **अधिवास** का वितरण निर्भर करता है।
- **छत्तीसगढ़** राज्य में विभिन्न युगों की चट्टानें मिलती है जो प्राचीन से आधुनिक काल में निर्मित हुई है।

- **इन चट्टानों में आग्नेय, कायांतरित और अवसादी तीनों** प्रकार के चट्टान शामिल हैं।
- छत्तीसगढ़ राज्य की भूवैज्ञानिक संरचना में आर्कियन, धारवाड़, कुडप्पा, गोंडवाना तथा दक्कन प्रमुख है।
- राज्य में कुडप्पा चट्टान समूह में विस्तृत भाग नदियों द्वारा निपेक्षत उपजाऊ कछारी मिट्टी पाई जाती हैं।
- दक्कन ट्रैप के चट्टानों के टूटने से काली मिट्टी का निर्माण हुआ है।
- धारवाड़ कम की चट्टानों से रेतीली मृदा, आर्कियन क्रम चट्टान से हल्की रेतीली मृदा निर्मित हुई।
- भूवैज्ञानिक संरचना की दृष्टि से छत्तीसगढ़ राज्य को निम्नलिखित कम में बांटा गया है

आर्कियन कम की चट्टान-

- **निर्माण**- ये सर्वाधिक प्राचीन एवं प्राथमिक चट्टानें कहलाती हैं, जो ज्वालामुखी निर्मित चट्टानें होती हैं।
- **प्रमुख क्षेत्र-** मुख्य रूप से राज्य के उत्तर-पूर्व भाग में साथ ही जशपुर, सीतापुर, अम्बिकापुर, पत्थलगांव, कुनकुरी, उत्तर पश्चिम मे कोटा, पेन्ड्रारोड, पण्डरिया, लोरमी, दक्षिण भाग में राजिम, धमतरी, महासमुन्द, कुरूद, गरियाबंद, कांकेर, बीजापुर, नारायणपुर, दंतेवाड़ा ।

विशेषताएं

- ये चट्टानें मुख्यरूप से जीवहीन एवं जीवाश्मरहित होती हैं।
- ये चट्टानें अत्यधिक आकुंचित होती है, क्योंकि ये भ्रंशित एवं शल्कित अवस्था में होती है।
- इसकी संरचना शल्कित पट्टी रूप में पाई जाती है।
- ये चट्टानें खनिज सम्पदा की दृष्टि से भारत की सबसे समृद्ध चट्टानें हैं।
- इसमें धात्विक, अधात्विक खनिजों के अतिरिक्त ताँबा, मँगनीज, लोहा आदि निक्षेप पाए जाते हैं।

धारवाड कम की चट्टान-

- **निर्माण**- धारवाड़ क्रम की चट्टानों का निर्माण आर्कियन क्रम की चट्टानों के अनाच्छादन और अपरदन के फलस्वरूप हुआ है।
- राज्य के बाहरी सीमा पर चारों ओर मुख्य रूप से स्लेट, क्वार्टजाईट, शिल्ट, कांग्लोमरेट, एवं नीस चट्टानें हैं।
- **प्रमुख क्षेत्र**- जगदलपुर, भानुप्रतापपुर, दंतेवाड़ा, मोहला, कसडोल, कवर्धा, तथा नारायणपुर में अबुझमाड़ पहाड़ी के उत्तर में स्थित रावघाट पहाड़ी ।

कुडप्पा कम की चट्टान-

- **निर्माण-** धारवाड़ क्रम की चट्टानों के अपक्षय एवं अपरदन से निर्मित होती है। (मूल स्वरूप अवसादी चट्टानों का)
- **प्रमुख क्षेत्र-** जगदलपुर, महासमुन्द, भोपानपट्नम, सरायपाली, नवागढ़, धमधा, दुर्ग, तिल्दा, कसडोल, भाटापारा, बिलाईगढ़, बलौदाबाजार, सांरगढ़, रायगढ़, चांपा, जांजगीर, बिल्हा, बिलासपुर क्षेत्र में है।
- बीजापुर, कोण्डागांव, अबुझमाड़ पहाड़ी क्षेत्र मे भी ये शैल पाए जाते हैं।

विन्ध्य क्रम की चट्टान -

- **निर्माण**- कुड़प्पा क्रम की चट्टानों के अपक्षय एवं अपरदन से इनका निर्माण होता है।
- इसमें प्रायः जीवाश्म के अंश पाए जाते हैं।
- चूने के पत्थर, बालु के पत्थर प्रमुख शैल हैं।
- **प्रमुख क्षेत्र**- कोण्डागांव, जगदलपुर, रायपुर, खैरागढ़ और गुण्डरदेही क्षेत्र में है।

गोंडवाना क्रम की चट्टान-

- **निर्माण**- कुड़प्पा क्रम की चट्टानों के अपक्षय एवं अपरदन से इनका निर्माण होता है।
- गोंडवाना क्रम की नदियों के द्वारा निपेक्षित पदार्थों से हुआ है।
- **प्रमुख क्षेत्र-** छत्तीसगढ़ में रायगढ़, बिलासपुर के पूर्वी भाग में इस कम की चट्टानें विस्तृत है।
- इसमें धात्विक, अधात्विक खनिजों के अतिरिक्त ताँबा, मैंगनीज, लोहा आदि निक्षेप पाए जाते हैं । इन्हे दो क्रम में विभाजित किया गया है :
  - **ऊपरी गोंडवाना कम**
  - **निचली गोंडवाना क्रम**

दक्कन क्रम की चट्टान-

- **निर्माण**- ये ज्वालामुखी निर्मित चट्टानें होती हैं।
- **काल**- क्रिटेशियस काल में निर्मित होती है।
- **खनिज**- काली मृदा, भूरी मृदा, लाल मृदा का निर्माण होता है। चूना पत्थर, खनिज प्राप्त होता है।
- **प्रमुख क्षेत्र-** बिलासपुर, राजनांदगांव के अंतर्गत मैकल श्रेणी के पूर्वी भाग का निर्माण दक्कन ट्रेप से हुआ है।
- जशपुर के उत्तर-पश्चिमी सीमा पर दक्कन की चट्टानें पाई जाती हैं।

विशेषताएं

- सामान्यतः यह एक आग्नेय चट्टानें हैं।
- इसके लावा निर्मित संरचना में सल्फर की मात्रा सर्वाधिक होती है।
- इसमें सिलिका, चूना पत्थर, बालू का पत्थर ग्रिट तथा क्ले प्रमुख शैलें है।

लेटेराइट-

- इसमें लौह के अंश अधिक पाई जाती हैं एवं बाक्साइड, मैग्नीज, कोयला, क्वार्ट्ज आदि खनिज पाए जाते हैं।
- **प्रमुख क्षेत्र-** रायपुर, दुर्ग, बिलासपुर एवं रायगढ़ जिले है तथा जशपुर सामरी में लावा क्षेत्र के मध्य लेटेराइट पाए जाते हैं।

एल्युविनियम-

- राज्य के महानदी तट पर इसका विस्तार मिलता है। इसकी मोटाई अधिक है।
- इस क्षेत्र की आंतरिक नदी घाटी में नरम क्ले, स्लेट एवं क्वार्टज, शिष्ट आदि पाए जाते हैं,
- **प्रमुख क्षेत्र-** उत्तरी पाट, उत्तरी वाड्रफनगर, लुण्ड्रा, बगीचा तहसील में विस्तार।

3
CHAPTER

छत्तीसगढ़ का प्राकृतिक स्वरूप

छत्तीसगढ़ का भौतिक/ प्राकृतिक स्वरूप

- बघेलखंड का पठार या सरगुजा बेसिन
- जशपुर-समरी पाट प्रदेश
- छत्तीसगढ़ का मैदान या महानदी बेसिन
- दण्डकारण्य प्रदेश

छत्तीसगढ़ के प्राकृतिक प्रदेश

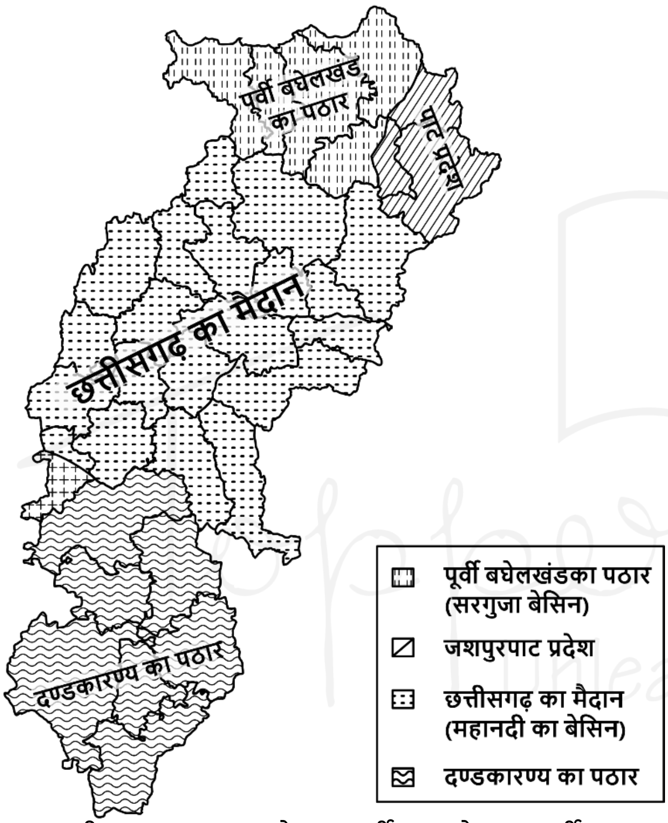

- छत्तीसगढ़ राज्य भारत के मध्यवर्ती पठार के उत्तरपूर्वी भाग में स्थित है।
- भौतिक विभेद के आधार पर इसे निम्नलिखित चार भौतिक विभागों में विभाजित किया जा सकता है।

पूर्वी बाघेलखंड का पठार या सरगुजा बेसिन

- यह प्राकृतिक प्रदेश छत्तीसगढ़ की उत्तर में स्थित है।
- यह बघेल खंड के पठार का पूर्वी भाग है इसलिए इसे पूर्वी बघेलखंड का पठार कहते है।
- यह प्राकृतिक प्रदेश महानदी अफवाह तंत्र व गंगा नदी के अफवाह तंत्र के मध्य जल विभाजन करता है।
- **भू-गर्भिक बनावट-** गोंडवाना शैल समूह व आर्कियन शैल समूह
- **क्षेत्रफल-** 21863 वर्ग कि.मी. कुल क्षेत्रफल का 16. 16 प्रतिशत
- **विस्तार-** कोरिया, सूरजपुर, बलरामपुर, सरगुजा, कोरबा
- **औसत ऊँचाई-** 300 -700 मी.
- **खनिज-** कोयला
- **ऊंची चोटी-** देवगढ़ की पहाड़ी (1033 मी.)

विशेष:-
- चांगभखार की पहाड़ी, देवगढ़ की पहाड़ी, छुरी उदयपुर की पहाड़ी, रामगढ की पहाडी
- यह सोन बेसिन का भाग है। .
- प्राचीनतम नाट्य शाळा रामगढ की पहाडी में स्थित है। .
- हसदो/हसदेव नदी इन्ही पहाड़ी से निकलती है।
- **प्रमुख नदियाँ-** हसदेव , रिहन्द , कन्हार , गोपद , एवं बनास है।
- **कर्क रेखा-** इस क्षेत्र के मध्य भाग से बलरामपुर , सूरजपुर , एवं कोरिया जिलेसे होकर गुजरती है।
- जशपुर प्रदेश के सबसे कम नगरीय जनसंख्या वाला क्षेत्र है।

जशपुर-समरी पाट का प्रदेश

- यह उत्तर पूर्वी दिशा में स्थित है। जो छोटा नागपुर का पठार का विस्तारित भाग है।
- ऊँचाई के आधार पर ये राज्य की सबसे ऊंचा प्रदेश है।
- यह अपने पार्श्व क्षेत्र में सीढ़ी नुमा तल रूप में विद्यमान है।
- क्षेत्रफल के आधार पर राज्य का सबसे छोटा प्रदेश है
- **क्षेत्रफल** - 6208 वर्ग कि. मी. कुल क्षेत्रफल का- 4.59 %
- **विस्तार** - जशपुर, पूर्वी सरगुजा, दक्षिण बलरामपुर, उत्तरी रायगढ़
- **भू-गर्भिक बनावट** - दक्कन ट्रेप
- **आकृति** - सीढ़ीनुमा
- **औसत ऊँचाई** - 400 -1000 मीटर
- **खनिज** - बाक्साइड

विशेष :-
- छत्तीसगढ़ की सबसे ऊँची छोटी गौरलाटा (1225 मी.) सामरी पाट में स्थित है। .

छत्तीसगढ़ का मैदान/महानदी बेसिन

- छत्तीसगढ़ का मैदान राज्य का ह्रदय प्रदेश है।
- धान का अधिक उत्पादन होने के कारन इसे धान का कटोरा कहा जाता है।
- छत्तीसगढ़ का मैदान उत्तर में सरगुजा रायगढ़ के पठार दक्षिण में बस्तर के पठार पश्चिम में माइकल पर्वत श्रेणी के मध्य स्थित है।
- इसका क्षेत्रफल लगभग 68064 वर्ग कि.मी. में है इस क्षेत्र का निर्माण मुख्यतः कुडप्पा चट्टानों के अपरदन के फलस्वरूप हुआ है।
- छत्तीसगढ़ के मैदान का विस्तार बिलासपुर जांजगीर, रायगढ़ ,राजनांदगाव, दुर्ग, रायपुर, धमतरी एवं महासमुंद जिले तक है।
- **क्षेत्रफल** - 68064 वर्ग की. मी.
- **प्रतिशत** - कुल क्षेत्रफल का 50.34 %
- **विस्तार** - बिलासपुर दुर्ग व रायपुर संभाग
- **औसत ऊँचाई**- 150 -400 मीटर
- **भू -गर्भिक बनावट**- कडप्पा शैल
- **खनिज** - चुना ,डोलोमाइड
- **ढाल** -पूर्व की ओर
- **आकृति** - पंखाकार

विशेष-

- मैदानी प्रदेश होने के कारन यहाँ पहाड़ी क्षेत्र से अधिक तापमान होता हैं .
- यह मुख्यतः आर्कियन एवं कडप्पा युग के चट्टानों से बना है।
- इस क्षेत्र में जलोट लालपिली मिटटी का विस्तार है।
- यहाँ लोह अयस्क चुना पत्थर।, बाक्साइड ,अदि पर्याप्त मात्रा में मिलता है
- महानदी , शिवनाथ , हसदेव , मांड ,जोंक ,पैरी , सोढुर ,अरपा , केलो ,आगर ,मनियारी ,लीलाझर , खारुन तांदुला , आदि इसी क्षेत्र नदिया है.
- महानदी धमतरी के निकट सिहावा पर्वत से निकलती है
- सबसे काम वनाच्छादन वाल क्षेत्र जांजगीर -चंपा इसी क्षेत्र में है।
- यह क्षेत्र मुंबई - हावड़ा रेल मार्ग से सीधा जुड़ा हुआ है।

दंडकारण्य का पठार :-

- यह छत्तीसगढ़ के दक्षिण में स्थित है
- यह प्रदेश का जनजाति बाहुल्य क्षेत्र एवं खनिज संसाधन की दृष्टिकोण से यह प्राकृतिक प्रदेश सर्वाधिक सम्पन है।
- गोदावरी नदी अफावह तंत्र का भाग है।
- इसकीऔसत ऊँचाई 600 मीटर के लगभग है
- दक्षिण के पठार में बस्तर ,दंतेवाड़ा और कांकेर जिले आते है।
- इस क्षेत्र में बैलाडीला की पहाड़िया स्थित है जो लौह अयस्क के लिए प्रसिद्ध है।
- **क्षेत्रफल** - 39060 वर्ग की. मी.
- **प्रतिशत** - कुल क्षेत्रफल का 28. 91 %
- **विस्तार** - बस्तर संभाग , दक्षिण राजनांदगाव
- **भू- गर्भिक बनावट -** आर्कियन युगीन शैल तथा धारवाड़ शैल समूह
- **खनिज** - लोह अयस्क
- **ढाल** - दक्षिण की ओर
- **वन** - साल

विशेष:-

- इंद्रावती नदी की घाटी बस्तर के पठार को दो भागो में बांटती है- उत्तर एवं दक्षिण।
- ये सर्वाधिक वर्षा वाला क्षेत्र है अबूझमाड़ में सबसे अधिक वर्षा होती है।
- इस क्षेत्र की नदियाँ - इंद्रावती, सबरी, कोटरी, डंकनी, शंखनी, नारंगी, गुदरा , नंदिराज है
- जगदलपुर के निकट इंद्रावती की प्रसिद्द जलप्रपात चित्रकूट जलप्रपात बनती है।
- बस्तर को साल का द्वीप कहा जाता है
- यहां की मिटटी लाल रेतीली है जो कम उर्वर (उपजाऊ) है।
- इस क्षेत्र का घड़वा या ढोकरा शिल्प काष्ठ शिल्प आदि लोक शिल्प के लिए विश्व विख्यात है

Toppers Notes
Unleash the topper in you

4 CHAPTER

छत्तीसगढ़ का भौतिक विभाजन एवं स्वरूप

छत्तीसगढ़ का भौतिक विभाजन एवं स्वरूप

- **पहाड़ी प्रदेश**
- **पठारी प्रदेश**
- **पाट प्रदेश**
- **मैदानी प्रदेश**

- छत्तीसगढ़ राज्य भारत के मध्यवर्ती पठार के उत्तरपूर्वी भाग में स्थित है।
- भौतिक विभेद के आधार पर इसे मूलतः चार भौतिक विभागों में विभाजित किया जा सकता है

पहाड़ी प्रदेश

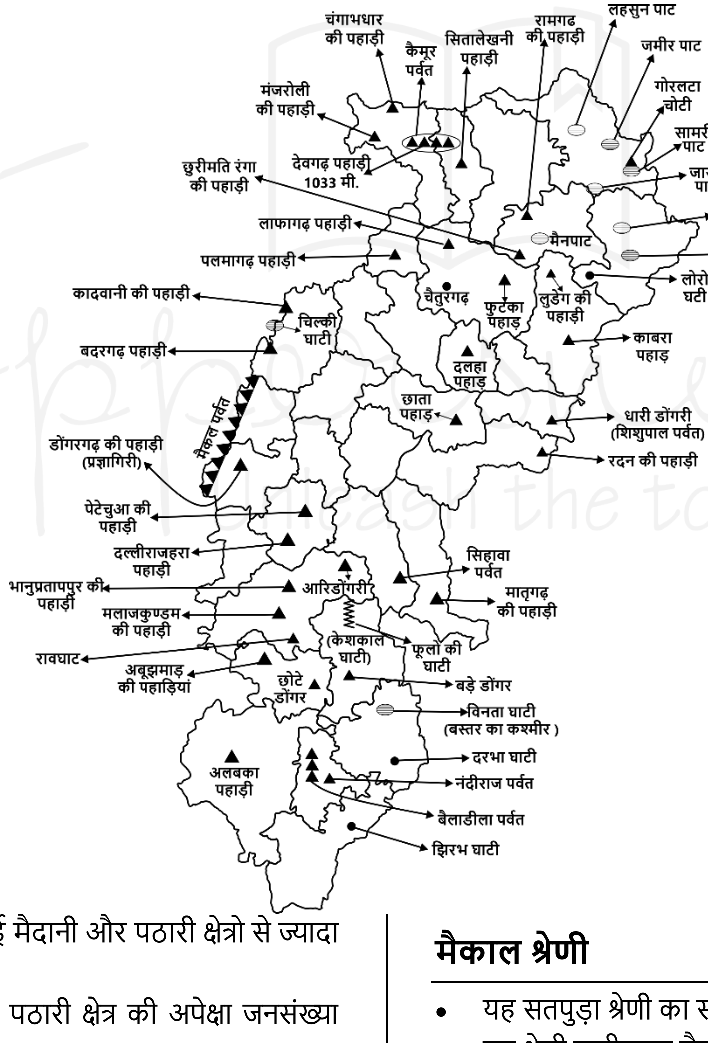

- पहाड़ी प्रदेशों की ऊंचाई मैदानी और पठारी क्षेत्रो से ज्यादा होती है।
- इस क्षेत्र में मैदानी और पठारी क्षेत्र की अपेक्षा जनसंख्या काधंत्वा कम होता है ।
- राज्य के घने वन तथा पहाड़ियाँ इसके अंतर्गत शमिल हैं ।
- राज्य में इस क्षेत्र को चार भागों में किया गया है-

मैकाल श्रेणी

- यह सतपुड़ा श्रेणी का सबसे पूर्वी हिस्सा है
- यह श्रेणी छत्तीसगढ़ मैदान के पश्चिम एवं उत्तरी-पश्चिमी भाग में स्थित है।
- इसकी ऊंचाई मैदानी भाग से पश्चिम की ओर क्रमशः बढ़ती गई है।

- **ऊँचाई-** समुद्र तल से 450-1000 मीटर
- **क्षेत्र**- बिलासपुर एवं राजनांदगांव में विस्तृत।
- सोन और महानदी के मध्य जल विभाजक के रूप में अवस्थित है ।
- इसके मध्य कई ऊँचे-ऊंचे कगारी क्षेत्र हैं,जैसे- चिल्पी घाट, बृजपानी घाट आदि ।

छुरी-उदयपुर की पहाड़ियाँ

- यह पहाड़ियाँ नदियों द्वारा अत्यधिक विच्छेदित हैं
- दोनों पहाडी **मांड नदी** (महानदी की सहायक नदी) द्वारा एक दूसरे से अलग होती हैं।
- **ऊँचाई**- 600 से 1000 मीटर ।
- **क्षेत्र-**
- छुरी की पहाड़ियाँ बिलासपुर जिले में हसदो नदी के पूर्वी भाग में स्थित है।
- उदयपुर की पहाड़ियाँ छुरी की पहाड़ियों के पूर्व में स्थिती है।

चांगभखार देवगढ़ पहाड़ियाँ

- **विस्तार**- राज्य के उत्तरी भाग में
- **ऊँचाई-** समुद्र तल से 600 से 1000 मीटर
- **क्षेत्र-** जनकपुर, बैकुण्ठपुर, मनेन्द्रगढ़, सूरजपुर, अम्बिकापुर, कुसमी एवं रामानुजगंज।
- इस पहाड़ी की सबसे ऊँची चोटी **देवगढ़** है,जो 1027 मीटर ऊंची है।

अबुझमाड़ की पहाड़ियाँ

- **विस्तार-** यह पहाड़ी दण्डकारण्य के पश्चिमी भाग में विस्तृत है
- **क्षेत्र-** नारायणपुर तहसील के दक्षिणी-पश्चिमी भाग में है तथा बीजापुर तहसील में स्थित है।

पठारी प्रदेश-

छत्तीसगढ़ राज्य पठारी भू भाग को निम्न भागों में विभाजित किया जा सकता है-

1. **पेण्ड्रा-लोरमी पठार-**
   - पेण्ड्रा का पठार छत्तीसगढ़ के मैदान की उत्तरी-पश्चिमी भाग में स्थित है।
   - लोरमी का पठार मुंगेली तहसील की उत्तरी पश्चिमी भाग में अवस्थित है।
   - **ऊंचाई-** औसत ऊँचाई 700 से 900 मीटर के मध्य है।
   - इसका अधिकतम भाग घने वनों से घिरा हुआ है।
   - **क्षेत्र-** पेण्ड्रा, कटघोरा, लोरमी एवं पण्डरिया तहसील अवस्थित हैं।
2. **धमतरी महासमुन्द उच्च भूमि-**
   - यह उच्च भू भाग सीमान्त क्षेत्र में स्थित है।
   - **क्षेत्र-** धमतरी, कुरूद, राजिम, महासमंद, गरियाबंद, सरायपाली, एवं देवगढ़ तहसीलों में विस्तृत है।
     - **ऊंचाई-** समुद्र तल से औसत ऊँचाई 500 से 1000 मीटर है।
3. **बस्तर का पठार-**
   - यह दण्डकारण्य का पठार के नाम से भी जाना जाता हैं।
   - **ऊंचाई-** समुद्र तल से औसत ऊँचाई 500 मीटर एवं अधिकतम ऊँचाई 762.5 मीटर है।
   - यह उत्तरी भाग में छत्तीसगढ़ मैदान तथा दक्षिण में बीजापुर पठारी भू भाग से घिरा है।
   - इस क्षेत्र के पूर्व में जगदलपुर पठार भूमि है।
4. **दुर्ग उच्च भूमि-**
   - यह क्षेत्र पश्चिम में रायपुर उच्च प्रदेश के समानान्तर फैला हुआ है।
   - इस उच्च भूमि की सबसे महत्वपूर्ण धरातलीय विशेषता इल्ली राजहरा की पहाड़ियाँ हैं ।
   - ये दुर्ग जिले के दक्षिणी भाग में 700 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है।
   - इस भाग में लौह- अयस्क युक्त चट्टान पाए जाते है। यह भाग घने वनों से घिरा है।
   - इस भाग में मैदानों की तुलना में जनसंख्या बहुत कम है।

पाट प्रदेश

- यह भूमि भी पठारी क्षेत्र है परन्तु इसका धरातलीय भाग सीढ़ीनुमा है।
- पाट प्रदेश पुरानी सम्प्राय भूमि का ही हिस्सा है जो उत्थान के कारण ऊंचे हो गए हैं।
- इस प्रदेश को भौगोलिक विशेषताओं के आधार पर निम्न भागों में विभाजित किया जा सकता है-

1. **मैनपाट-**
   - यह प्रदेश सरगुजा जिले के दक्षिण-पूर्वी क्षेत्र में स्थित एक समतल उच्च भू भाग है।
   - इस भाग की मुख्य श्रेणी 24 किमी लम्बी तथा 12 किमी चौड़ी हैं।
   - यह प्रदेश उत्तर-मध्य में दक्षिणी अम्बिकापुर और सीतापुर तहसीलों तक फैला है।
   - समुद्र तट से इसकी औसत ऊंचाई 1152 मीटर है।
   - यहाँ लैटेराइट मिट्टियाँ के साथ कहीं-कहीं ट्रेप चट्टानें पायी जाती हैं।
   - वर्तमान समय में कोरबा में स्थित एल्युमिनियम कारखाने को इसी प्रदेश से वॉक्साइट की आपूर्ति की जाती है।
   - इस प्रदेश में तिब्बती शरणार्थियों को बसाया गया है।
2. **जारंग पाट**
   - यह भाग उत्तर पूर्व में सीतापुर एवं लुण्डा तहसीलों में फैला है।
   - समुद्र तल से इसकी औसत ऊँचाई 1145 मीटर है।
   - इसका विस्तार पंडरापाट तक है।

3. सामरी पाट

- यह पाट प्रदेश पूर्वोत्तर भाग में सामरी तहसील तक विस्तृत है।
- इस भू भाग की समुद्र तल से औसत ऊँचाई 700 से 1250 मीटर है।
- इस क्षेत्र का पूर्वी भाग अधिक ऊंचा है, जो जमीर पाट के नाम से भी जाना जाता हैं।

4. जशपुर पाट

- यह प्रदेश छत्तीसगढ़ राज्य का सबसे बड़ा पाट प्रदेश हैं।
- यह जशपुर जिले में स्थित है। इस भू भाग का क्षेत्रफल 4300 वर्ग किमी से अधिक है।
- इस क्षेत्र में ईब एवं मैमी नदियां बहती है ।
- इस समतल पठारी एवं पाट को जशपुर पाट प्रदेश कहा जाता है।

मैदानी प्रदेश-

- इस क्षेत्र की ऊंचाई समुद्र तल से 300 मी से कम है, जो एक समतल मैदानी प्रदेश के रूप में स्थित हैं।
- इसमें उच्चावच निम्न है। इस मैदानी प्रदेश को निम्न भागों में बाँटा जा सकता है-

1. छत्तीसगढ़ का मैदान-

- यह क्षेत्र भारत का धान का कटोरा कहलाता है। जो राज्य के मध्य भाग में स्थित है।
- यह क्षेत्र बघेलखण्ड पठार और सतपुड़ा के बीच मे स्थित है।
- यह प्रदेश राज्य के मध्य में लगभग 26680 वर्ग किमी क्षेत्र में विस्तृत है।
- यह क्षेत्र एक संरचनात्मक एंव अपरदनात्मक मैदानी भू भाग है।
- इस मैदान को 2 उपप्रदेशों एवं 6 सूक्ष्म प्रदेशों में विभाजित किया जा सकता है।

2. दुर्ग और रायपुर का मैदान-

- यह भाग छत्तीसगढ़ मैदान के दक्षिणी क्षेत्र में अवस्थित है।
- यह शिवनाथ और महानदी अपवाह बेसिन के अन्तर्गत आता है।
- इस भू भाग का ढाल उत्तर की ओर है।
- इस मैदानी भाग में रायपुर, दुर्ग, भिलाई आदि महत्वपूर्ण औद्योगिक और व्यापारिक नगर बसें हुऐ हैं।
- भौगोलिक स्थिति के आधार पर इस मैदान को तीन उपविभागों में विभाजित किया गया है-

क. ट्रांस महानदी मैदान-

- ○ यह मैदानी भाग महानदी के पश्चिम में स्थित है।
- ○ इस क्षेत्र के अन्तर्गत राजिम, रायपुर का दक्षिणी भाग एवं धमतरी तहसील का उत्तरी-पूर्वी क्षेत्र आता है।

ख. महानदी-शिवनाथ दोआब-

- ○ यह दोआब छत्तीसगढ़ मैदान का मध्यवर्ती भू भाग है।
- ○ जिसकी औसत ऊंचाई 250 मीटर है। इस क्षेत्र के मध्य से होकर खारुन नदी बहती है।

ग. ट्रांस शिवनाथ मैदान-

- ○ यह मैदान एक समरूप भू भाग है जो समुद्रतल से औसतन 300 मीटर ऊँचा है।
- ○ इस भू भाग का विस्तार शिवनाथ नदी के पश्चिम में पूर्वी राजनांदगाँव और पश्चिमी दुर्ग जिले में 4500 वर्ग किमी भू क्षेत्र में विस्तृत है।

3. बिलासपुर-रायगढ़ मैदान

- यह भू भाग छत्तीसगढ़ मैदान के उत्तर में 11200 वर्ग किमी क्षेत्र में है।
- इसकी दक्षिणी सीमा शिवनाथ एवं महानदी बनाती है।
- इस क्षेत्र का उत्तरी भू भाग उच्च भूमि से घिरा है।
- इस क्षेत्र का औसत ऊँचाई 280 मीटर है।
- इसकी ऊंचाई दक्षिण की ओर कम होती गई है।
- इस मैदानी भू भाग का ढाल मंद और दक्षिण दिशा की ओर है।
- इस भू भाग से होकर अरपा, हसदो, केलो, आगर एवं मनियारी नदियाँ प्रवाहित होती हैं।

4. बस्तर का मैदान-

- यह मैदान राज्य के दक्षिणी सीमांत प्रदेश में स्थित है। जो गोदावरी तथा उसकी सहायक नदियों के अवसाद से बना है।
- यह मैदान उत्तर की ओर दक्षिणी तथा उत्तर- पूर्वी पठार तक फैला है।
- यह भाग कोंटा तथा बीजापुर तक विस्तृत है।
- इस क्षेत्र की ऊंचाई 200 मीटर तथा चौड़ाई लगभग 25 किमी है।
- इस भू भाग का निर्माण ग्रेनाइट एवं नीस शैलों के अपरदन से हुआ है।

छत्तीसगढ के प्रमुख पर्वत, पहाड़ियाँ एवं उच्चावच स्थल

पहाड़ियाँ/चोटी	ऊँचाई (मीटर में)	क्षेत्र
गोरलाटा	1225	सामरीपाट (बलरामपुर)
नन्दीराज	1210	बेलाडीला (दंतेवाड़ा)
बदरगढ़	1176	मैकल श्रेणी (कवर्धा)
मैनपाट	1152	सरगुजा
पल्मागढ़ की चोटी	1080	पेंड्रा -लोरमी का पठार (बिलासपुर)
अबूझमाड़ की पहाड़ियाँ	1076	नारायणपुर

लाफागढ़ चोटी	1048	पेंड्रा-लोरमी का पठार (कोरबा)
जारंग पाट	1045	बलरामपुर
देवगढ़	1033	कोरिया
धारी डोंगर (शिशुपाल)	899	महासमुंद

5. प्रमुख तथ्य-

- भौगोलिक स्थिति (Geographical Location)
- अक्षांश (Latitude) -17°46' N/उ. To/से 24°5'N/उ.
- देशांतर (Longitude) -80°15' E/पू. To/से 84°24'E/पू.
- राज्य का क्षेत्रफल µ1,35,192 वर्ग किमी. (देश के कुल क्षेत्रफल का 4.14 प्रतिशत एवं
- मध्य प्रदेश के कुल क्षेत्रफल का 30.47 प्रतिशत)
- राज्य के ज़िले, जिनसे कर्क रेखा गुज़रती है -03 (कोरिया, सूरजपुर, बलरामपुर)
- राज्य के ज़िले, जिनसे भारतीय मानक समय रेखा (IST) गुज़रती है -07 (सूरजपुर, कोरबा जांजगीर-चांपा, बलौदाबाज़ार, महासमुंद, गरियाबंद, बालोद)
- राज्य की कर्क रेखा एवं आई.एस.टी. का मिलन बिंदु -सूरजपुर (अन्य स्रोतों में कोरिया)
- क्षेत्रफल के आधार पर देश में स्थान -10वाँ
- राज्य की पूर्व से पश्चिम की चौड़ाई -435 किमी.
- राज्य की उत्तर से दक्षिण की लंबाई -700 से 800 किमी.
- राज्य से सटे राज्यों की संख्या -7
- अन्य राज्यों से सटे ज़िलों की संख्या -18
- सर्वाधिक राज्यों से सटे ज़िले -02 (बलरामपुर व सुकमा)
- 2 राज्यों की सीमा को स्पर्श करने वाले ज़िले -03 (जशपुर, राजनांदगाँव, बीज़ापुर)
- छत्तीसगढ़ की सबसे लंबी सीमा छूने वाला राज्य -ओडिशा
- छत्तीसगढ़ की सबसे छोटी सीमा छूने वाला राज्य -आंध्र प्रदेश
- छत्तीसगढ़ का सबसे बड़ा भू-आकृतिक प्रदेश -छत्तीसगढ़ का मैदान
- छत्तीसगढ़ का सबसे छोटा एवं सबसे ऊँचा भू-आकृतिक प्रदेश -जशपुर-सामरीपाट
- छत्तीसगढ़ का सबसे बड़ा अपवाह तंत्र -महानदी अपवाह तंत्र
- छत्तीसगढ़ का सबसे छोटा अपवाह तंत्र -नर्मदा अपवाह तंत्र
- छत्तीसगढ़ का सबसे बड़ा मृदा समूह -लाल-पीली मृदा
- छत्तीसगढ़ का सबसे छोटा मृदा समूह -लैटेराइट मृदा
- छत्तीसगढ़ का जलवायु -उष्णकटिबंधीय मानसूनी
- छत्तीसगढ़ का चेरापूंजी -अबुझमाड़
- छत्तीसगढ़ का सर्वाधिक ठंडा स्थान -मैनपाट (सरगुजा)
- छत्तीसगढ़ का सर्वाधिक गर्म स्थान -चांपा
- छत्तीसगढ़ का सबसे बड़ा शैल समूह -आर्कियन
- छत्तीसगढ़ का सबसे छोटा शैल समूह -दक्कन ट्रेप
- छत्तीसगढ़ की सबसे ऊँची चोटी -गौरलाटा (1225 मी.)
- छत्तीसगढ़ की सबसे लंबी नदी -महानदी (858 किमी.)
- छत्तीसगढ़ मे बहने वाली सबसे लंबी नदी -शिवनाथ (290 किमी.)
- छत्तीसगढ़ का शिमला -मैनपाट

Toppersnotes Unleash the topper in you

5 CHAPTER

छत्तीसगढ़ का अपवाह क्षेत्र

छत्तीसगढ़ के अपवाह तन्त्र को 5 भागों में विभाजित किया गया है

- महानदी अपवाह तन्त्र (राज्य का सबसे बड़ा अपवाह तन्त्र)
- गोदावरी अपवाह तन्त्र (राज्य का दूसरा बड़ा अपवाह तन्त्र)
- गंगा अपवाह तन्त्र
- नर्मदा अपवाह तन्त्र (सबसे छोटा अपवाह तन्त्र)
- ब्राह्मणी अपवाह तन्त्र

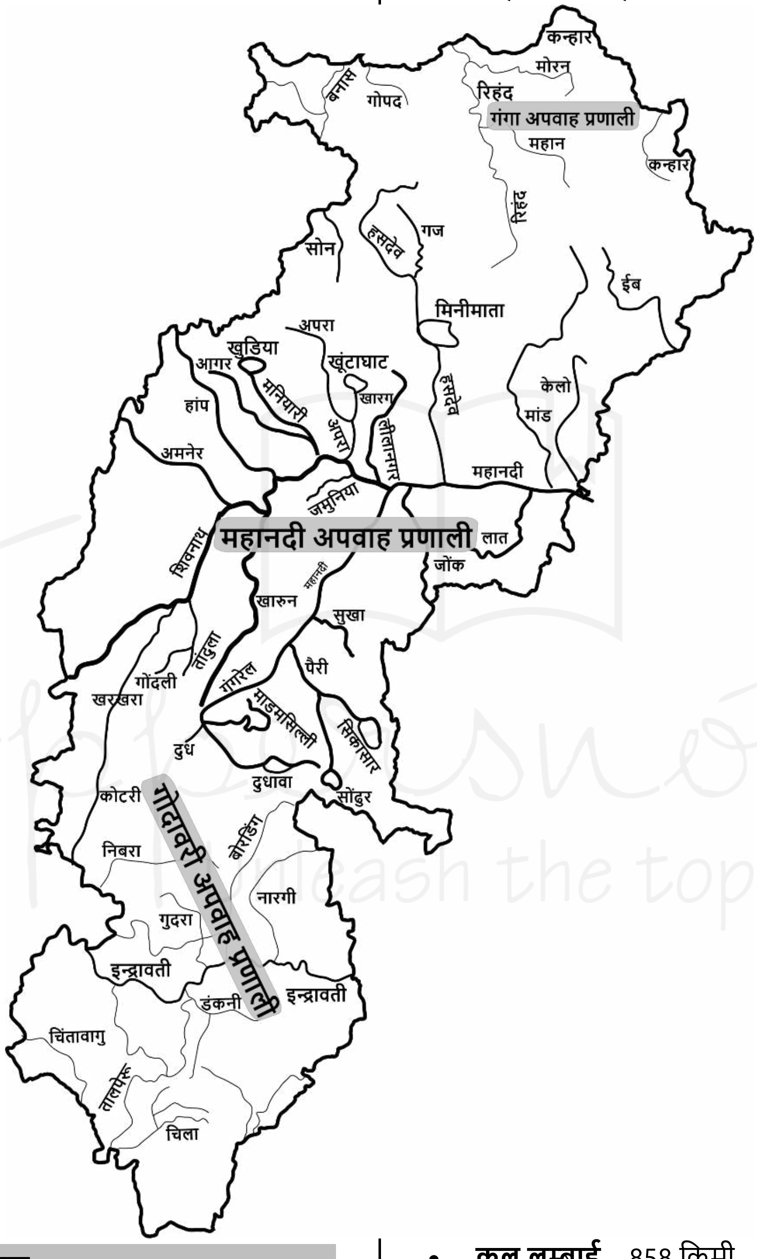

महानदी अपवाह तन्त्र

- **महानदी उद्गम स्थल** – धमतरी के निकट सिहावा पर्वत
- **महानदी का नामकरण –** श्रृंगी ऋषि के शिष्य महानन्दा के नाम पर
- **प्राचीन नाम** – कनकनन्दिनी नीलोत्पला (सतयुग वायुपुराण में), चित्रोत्पला (द्वापर युग स्कन्दपुराण में)
- **छत्तीसगढ़ में लम्बाई** – 286 किमी.
- **कुल लम्बाई** – 858 किमी
- **महानदी का विस्तार क्षेत्र** – छत्तीसगढ़ के मैदानी क्षेत्रों में
- **महानदी का प्रवाह क्षेत्र –** धमतरी, कांकेर, बालोद, रायपुर, गरियाबन्द, महासमुन्द, बलौदाबाजार, जांजगीर-चाम्पा तथा रायगढ़
- **तट पर बसे प्रमुख शहर** – शिवरीनारायण, सिरपुर, चन्द्रपुर एवं राजिम

- **विसर्जन (मुहाना**) – ओडिशा राज्य के कटक में बंगाल की खाड़ी में गिरती है।
- **महानदी में दक्षिण दिशा से मिलने वाली सहायक नदियाँ** – दूध, सोण्दूर, सिलयारी, पैरी, सूखा, जोंक और लात
- **महानदी में उत्तर दिशा से मिलने वाली सहायक नदियाँ** – शिवनाथ (सबसे बड़ी सहायक नदी), हसदेव/हसदो, बोराई, माण्ड, केलो, अरपा, ईब
- **दूध नदी:-सीता नदी:-** पूर्व से पश्चिम बहती है

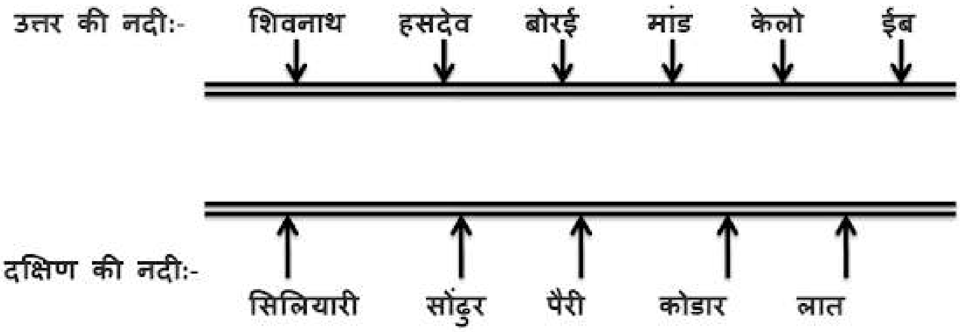

- **महानदी पर स्थित परियोजना** –
  - **रुद्री बैराज परियोजना** - वर्ष 1915 (धमतरी जिला)
  - **गंगरेल बाँध (रविशंकर जलाशय)** – वर्ष 1979 (धमतरी जिला)
  - **दुधवा जलाशय**-वर्ष 1963 (धमतरी जिला)
  - महानदी पर ओडिशा में कटक के समीप **हीराकुड बाँध** बना है, जो भारत का सबसे लम्बा बाँध है
- **महानदी पर स्थित 4 संगम-**
  - **राजिम संगम (गरियाबन्द) –** इसे छत्तीसगढ़ का प्रयाग कहा जाता है। यह **महानदी, पैरी तथा सोण्ढूर नदी** का संगम स्थल है।
  - **शिवरीनारायण (जांजगीर-चाम्पा) –** यह स्थल **महानदी, शिवनाथ तथा जोंक नदी (सोन लोहरसी/ किरौन्जी)** संगम स्थल है।
  - **चन्द्रपुर (जांजगीर-चाम्पा) –** यह स्थल **महानदी, माण्ड एवं लात नदियों** का संगम स्थल है।
  - **खैरागढ़ (राजनान्दगाँव) –** यह स्थल **आमनेर, मुस्का व पिपरिया नदियों** का संगम स्थल है।
- महानदी अपवाह तन्त्र छत्तीसगढ़ का सबसे बड़ा अपवाह तन्त्र है, जो छत्तीसगढ़ के अपवाह तन्त्र का लगभग 56.15% (77,432 वर्ग किमी) है।
- छत्तीसगढ़ में इस अपवाह तन्त्र का ढाल पूर्व दिशा की ओर है अर्थात् इस अपवाह तन्त्र की अधिकांश नदियाँ पूर्व की ओर प्रवाहित होती हैं।
- महानदी अपवाह तन्त्र का विकास पूर्ण रूप से स्थलखण्ड के ढाल के स्वभाव के अनुसार हुआ है।
- महानदी अपवाह तन्त्र के मुख्य क्षेत्र- कवर्धा, धमतरी, महासमुन्द, राजनान्दगाँव, दुर्ग, रायपुर, बिलासपुर, रायगढ़ जांजगीर-चाम्पा एवं जशपुर आदि हैं।
- महानदी धमतरी से निकलकर रायपुर तथा जांजगीर-चाम्पा जिले की सीमा निर्धारित करती है। महानदी को छत्तीसगढ़ की गंगा एवं छत्तीसगढ़ की जीवन रेखा भी कहा जाता है।
- छत्तीसगढ़ का सबसे लम्बा सड़क पुल दिलीप सिंह जूदेव सेतु (1830 मी) महानदी नदी पर रायगढ़ में स्थित है। यह पुल **सूरजपुर एवं नदीगाँव के मध्य** बनाया गया है।

महानदी की प्रमुख सहायक नदियाँ

शिवनाथ नदी

- **उद्गम स्थल** – महाराष्ट्र के गोडरी गाँव (गढ़चिरौली जिला) से
- **प्राचीन नाम** – शुनि नदी (मत्स्य एवं वामन पुराण में) एवं शिव नदी
- **प्रवाह क्षेत्र** – राजनन्दगाँव, दुर्ग, बेमेतरा, मुंगेली, बिलासपुर, बलौदाबाजार, जांजगीर-चम्पा
- **कुल लम्बाई** – 290 किमी (छत्तीसगढ़ में बहने वाली सबसे लम्बी नदी)
- **राज्य में प्रवेश** – राजनन्दगाँव के पानाबरस पहाड़ी क्षेत्र से (अम्बागढ़ चौकी के निकट)
- **नदी के किनारे बसे नगर** – अम्बागढ़ चौकी (राजनान्दगाँव), धमधा (दुर्ग) व नान्दघाट (बेमेतरा)
- **विसर्जन** – शिवरीनारायण के निकट महानदी में मिलती है।
- **उत्तर दिशा की ओर से मिलने वाली सहायक नदी** – मोंगरा बैराज परियोजना (राजनादगांव) आमनेर, हॉफ, आगर, मनियारी, अरपा एवं लीलागार
- **दक्षिण दिशा की ओर से मिलने वाली सहायक नदी** – खरखरा, तान्दुला, खारून एवं जमुनिया
- इस नदी के तट पर मदकूद्वीप (मुंगेली जिला) है, जहाँ पर ईसाइयों का प्रसिद्ध मेला लगता है।
- **सीमा-**
- बलौदाबाजार- बेमेतरा
- बलौदाबाजार- जांजगीर
- बलौदाबाजार- मुंगेली
- **विशेष-**
- महानदी की सबसे लम्बी सहायक नदी है।
- छत्तीसगढ़ में बहाने वाली सबसे लंबी नदी है ।
- महानदी के बाद दूसरा महत्वपूर्ण नदी हैं।

शिवनाथ नदी की प्रमुख सहायक नदियाँ

1. **तान्दुला नदी**
   - **उद्गम स्थल** – कांकेर जिले के भानुप्रताप पुर के उत्तर में स्थित पहाड़ियों से
   - **प्रवाह क्षेत्र** – कांकेर, बालोद तथा दुर्ग
2. **खारून नदी**
   - **उद्गम स्थल-** बालोद जिले के दक्षिण-पूर्व में पेटेचुआ पहाड़ी के समीप
   - **प्रवाह क्षेत्र** – दुर्ग, बालोद, रायपुर, बेमेतरा तथा बलौदाबाजार
   - **कुल लम्बाई** – 80 किमी
   - नदी के किनारे स्थित नगर रायपुर
   - खूंटाघाट जलाशय का निर्माण इसी नदी पर किया गया है।
3. **ईब नदी**
   - **उद्गम स्थल**- जशपुर जिले के पण्डरापाट स्थित खुरजा पहाड़ी से
   - **इस नदी की कुल लम्बाई** – 202 किमी और छत्तीसगढ़ में लम्बाई – 87 किमी
   - **विसर्जन** – ओडिशा के सम्बलपुर में महानदी में मिलता है।
4. **मनियारी नदी**
   - **उद्गम स्थल** – बिलासपुर जिले के उत्तर-पश्चिम में पेंड्रा लोरमी पठार के सिहावल नमक स्थल से
   - छत्तीसगढ़ में
   - **लम्बाई** – 134 किमी
   - इसका प्रवाह क्षेत्र मुंगेली तथा बिलासपुर
   - **सहायक नदियाँ** – आगर , छोटी नर्मदा, टेसुवा व घोंघा
   - **विसर्जन** – मदकूद्वीप के निकट शिवनाथ नदी में
5. **हॉफ नदी**
   - **उद्गम स्थल** – कवर्धा जिले के कान्दावाड़ी पहाड़ी से
   - **कुल लम्बाई** – 44 किमी
   - **प्रवाह क्षेत्र** – कवर्धा व बेमेतरा
   - **विसर्जन** – शिवनाथ नदी में मिलती है।
6. **अरपा नदी**
   - **उद्गम स्थल** – पेण्ड्रा लोरमी के पठार पर स्थित खोडरी खोंगसरा पहाड़ी से
   - **कुल लम्बाई** – 100 किमी
   - **प्रवाह दिशा** – बिलासपुर जिले के उत्तर-पश्चिमी भाग से दक्षिण की ओर प्रवाहित होती है।
   - **प्रवाह क्षेत्र** – बिलासपुर, बलौदाबाजार
   - **विसर्जन** – मानिक चोरी के समीप शिवनाथ नदी में मिलती है।
7. **लीलागर नदी**
   - **उद्गम स्थल** – कोरबा की पूर्वी पहाड़ी
   - **प्राचीन नाम** – निडिला नदी
   - **कुल लम्बाई** – 135 किमी
   - **प्रवाह क्षेत्र** – कोरबा तथा बिलासपुर
   - **विसर्जन** – कोरबा क्षेत्र से निकलकर दक्षिण में बिलासपुर और जांजगीर तहसील की सीमा बनाती हुई शिवनाथ नदी में मिलती है।
8. **हसदो नदी**
   - **उद्गम स्थल** – कोरिया जिले के सोनहट क्षेत्र में देवगढ़ के कैमूर की पहाड़ी
   - **कुल लम्बाई** – 338 किमी
   - **छत्तीसगढ़ में लम्बाई** – 176 किमी
   - **प्रवाह क्षेत्र –** कोरिया, कोरबा, जांजगीर-चाम्पा
   - **विसर्जन** – शिवरीनारायण के कोरा-सिलादेही ग्राम के निकट महानदी में मिलती है।
   - यह नदी महानदी की दूसरी सबसे लम्बी सहायक नदी है।
9. **माण्ड नदी**
   - **उद्गम स्थल** – सरगुजा जिले के मैनपाट से
   - **प्रवाह क्षेत्र** – सरगुजा, जशपुर, रायगढ़ व जांजगीर-चाम्पा
   - **कुल लम्बाई** – 155 किमी
   - **विसर्जन** – जांजगीर जिले में चन्द्रपुर के समीप महानदी में मिलती है।
10. **केलो नदी**
    - **उद्गम स्थल** – लुडेंग पहाड़ी रायगढ़ जिले की लैलूंगा तहसील से
    - **प्रवाह क्षेत्र** – रायगढ़ से
    - **विसर्जन** – ओडिशा में महादेवपाली नामक स्थल दे समीप महानदी में मिलती है
11. **खरखरा नदी**
    - **उद्गम स्थल** – बालोद जिले के डौंडीलोहारा से
12. **हसदेव:-**
    - **उद्गम-** सोनहत पहाड़ी (कोरिया)
    - **लम्बाई-** 176 KM
    - **सहायक नदी-** गज, अहिरान, चोरनई, तान
    - **महानदी में संगम-** चांपा के केरा सिलादेही में
    - **जलप्रपात-** अमृतधारा
    - **बांध-** मिनी माता (हसदो-बांगो)
    - **तटीय नगर-** कोरबा
    - **विशेष-** हसदेव को प्रदेश की सबसे प्रदूषित नदी कहा जाता है